नैनीताल जनपद के किशोरों में सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

1. श्री विवेक आर्या
मनोविज्ञान शोधार्थी
कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल

2. प्रो. अनीता जोशी
मनोविज्ञान विभाग
पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामनगर, नैनीताल

भूमिका – सांवेगिक बुद्धि स्वयं की एवं दूसरों के संवेगों को समझने व नियन्त्रित करने की योग्यता है। गोलमैन का मत है कि व्यक्ति के जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सामान्य बुद्धि 20 प्रतिशत तथा सांवेगिक बुद्धि 80 प्रतिशत उत्तरदायी है। सांवेगिक बुद्धि का उपयोग समाज में उचित स्थान प्राप्त करने, सम्बन्धों में घनिष्ठता बनाए रखने, जीवन को सुखमयी व शांतिमय बनाने, वांछित सफलता प्राप्त करने में, उच्च उपलब्धि व अभिप्रेरणा स्तर प्राप्ति में तथा क्रोध नियन्त्रण में किया जाता है। सांवेगिक बुद्धि से तात्पर्य समस्याओं को सुलझाने और व्यवहार को विनियमित करने के लिए आवश्यक किसी की और दूसरों की भावनात्मक स्थिति की पहचान, उपयोग, समझ और प्रबंधन में शामिल मानसिक प्रक्रियाओं से है।

सांवेगिक बुद्धि के बारे में सर्वप्रथम, 1920 में थार्नडाइक ने सामाजिक बुद्धि के सम्प्रत्यय में बताया। 1940 में वेश्लर ने बुद्धि के भावात्मक तत्व को सफलता के लिए आवश्यक माना। 1950 में मेसलो ने भी बताया कि सांवेगिक शक्ति को कैसे निर्मित किया जा सकता है। 1975 में गार्डनर ने बहुल बुद्धि का सम्प्रत्यय प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने अन्तरवैयक्तिक बुद्धि व अन्तरावैयक्तिक बुद्धि को स्पष्ट किया। 1985 में वायने पायने ने अपने पीएच.डी. शोध प्रबन्ध में Emotional Intelligence का प्रयोग किया। 1987 में कीथ बीसले ने मेनसा मैगजीन में पद Emotional Quotient का प्रयोग किया।

डेनियल गोलमैन के अनुसार, ''संवेगात्मक बुद्धि खुद को अभिप्रेरित करने के लिए स्वयं एवं दूसरों के भावनाओं को पहचानने की क्षमता, ताकि हमारे अंदर और हमारे रिश्तों में भावनाओं का बेहतर प्रबन्धन हो सके।'

साहित्य समीक्षा – कुमारी (2014) ने किशोरों में लिंग और संवेगात्मक बुद्धि के बीच संबंधों की जांच की। प्रतिदर्श के रुप में बिहार के मधुबनी जिले के विभिन्न स्कूलों से 200 हाई स्कूल के छात्रों को लिया गया। परिणामों में पाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि पर छात्र व छात्राओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। छात्राओं ने छात्रों की तुलना में अधिक संवेगात्मक बुद्धि दिखाई।

श्रीवास्तव, निशा; रावते, हितेश्वरी व लखेरा, संगीता (2015) ने ''शासकीय एव. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन'' नामक शोध किया। यह शोध दुर्ग जनपद में किया गया। शोध में पाया गया कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया, छात्रों के सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया तथा छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

सोनी, मधु कंवर व बाबल, जगदीश (2016) ने ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन'' नामक शोध किया और पाया कि छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। यह शोध जोधपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र तिंवरी में किया गया।

पुनेठा, दीपा; मित्तल, कविता एवं शर्मा, सपना (2017) ने ''उत्तराखण्ड राज्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का लिंग, संकाय एवं बोर्ड के सन्दर्भ में अध्ययन'' नामक शोध किया गया। यह शोध उत्तराखण्ड के गढ़वाल मण्डल में किया गया। शोध में पाया गया कि छात्र व छात्राओं में सांवेगिक बुद्धि समान होती है। कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि समान होती है। केन्द्र व राज्य बोर्ड के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि समान होती हैं।

आलम, महफूज़ (2018) ने 'ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ एडोलोसेंट्स स्टूडेंट्स' नामक शीर्षक पर शोध किया। यह शोध झारखंड के सिंहभूम जिले के 200 किशोरों पर, जिसमें 100 छात्र व 100 छात्राएं थीं, पर किया गया। परिणाम में पाया गया कि लिंग व स्कूल की प्रकृति के आधार पर सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर था। निजी विद्यालयों के किशोरों में, सरकारी विद्यालयों के किशोरों की अपेक्षा अधिक सांवेगिक बुद्धि थीं। नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं था।

संगवान, संतोष एवं बाल्दा, शांति (2019) ने 'इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ एडोलोसेंट्स' नामक शीर्षक पर शोध किया। यह शोध हरियाणा के हिसार जिले के 240 किशोरों पर, जिसमें 120 नगरीय व 120 ग्रामीण किशोर थे, पर किया गया। नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों में सामान्य स्तर का तनाव रहा। छात्राओं में, छात्रों की अपेक्षा अधिक संवेगात्मक बुद्धि रही।

फुर्खानी, नुसाईबाह नूर (2020) ने 'द रोल ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस इन एडोलोसेंट्स डेवलपमेंट' नामक शीर्षक पर शोध किया। परिणाम में पाया गया कि छात्राओं में, छात्रों की अपेक्षा अधिक संवेगात्मक बुद्धि थीं।

रोनाड, प्रभाकर हेनरी एवं मथियस, सहाना (2021) ने 'स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस एंड लाइफ स्ट्रेस इन एडोलोसेंट स्टूडेंट्स फ्रॉम जोइंट एंड न्यूक्लियर फैमिलीस ऑफ नवीं मुम्बई' नामक शीर्षक पर शोध किया। परिणामों में पाया गया कि छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अंतर है तथा छात्राओं में सांवेगिक बुद्धि काफी अधिक है और जीवन तनाव भी काफी अधिक है। सांवेगिक बुद्धि एवं जीवन तनाव में कोई सहसंबंध नहीं पाया गया।

कुलकर्णी, प्रिया योगेश एवं वेल्हल, गजानन (2023) ने 'इमोशनल इंटेलीजेंस फ्रॉम जेंडर पर्सपेक्टिव ड्यूरिंग मिड टू लेट एडोलोसेंस इन एन इंडियन कॉनटेक्स्ट' नामक शीर्षक पर शोध किया। शोध में पूर्वी महाराष्ट्र के 1060 किशोरों को लिया गया था। परिणाम में पाया गया कि लिंग के आधार पर किशोरों के सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं था।

भट्टाचार्या, सोमनाथ एवं साहा, बिस्वाजीत (2024) ने 'ए प्रोब इंटू द इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ द स्कूल गोइंग एडोलोसेंट्स' नामक शीषक पर शोध किया। यह शोध पश्चिम बंगाल के पश्चिम मेदिनीपुर जिले के 530 स्कूल जाने वाले किशोरों पर हुआ है। परिणाम में पाया गया कि स्कूल जाने वाले किशोर भावनात्मक रुप से मजबूत है और उनमें महत्वपूर्ण लिंग अंतर पाया गया है।

उद्देश्य – 1. नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों में सांवेगिक बुद्धि की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. किशोर छात्र व छात्राओं में सांवेगिक बुद्धि की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. विज्ञान व कला वर्ग के किशोरों में सांवेगिक बुद्धि की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. किशोरों में सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर निवास स्थान, लिंग–भेद व संकाय का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं – 1. नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. किशोर छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
3. विज्ञान व कला वर्ग के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4. किशोरों में सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर निवास स्थान, लिंग–भेद व संकाय का कोई सार्थक अन्तःक्रियात्मक प्रभाव नहीं होगा।

शोध अभिकल्प – शोध का अभिकल्प 'कारकगुणित अभिकल्प' है। शोध में तीन स्वतंत्र चर है – निवास स्थान, लिंग–भेद तथा संकाय, जिस कारण इसे 'त्रिकारक गुणित अभिकल्प' कहा जाएगा। तीनों स्वतंत्र चर के दो–दो स्तर है –

1. निवास स्थान – नगरीय व ग्रामीण
2. लिंग–भेद – छात्र व छात्रा
3. संकाय – विज्ञान व कला

अतः यह 2 x 2 x 2 प्रकार का कारकगुणित अभिकल्प कहा जाएगा।

चर – स्वतंत्र चर – निवास स्थान, लिंग–भेद तथा संकाय

आश्रित चर – सांवेगिक बुद्धि

प्रतिदर्श – प्रतिदर्श के रुप में उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जनपद के 400 किशोरों को लिया गया है। प्रतिदर्शों को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से चयनित किया गया है। किशोरों का आयु वर्ग 16 – 17 वर्ष है। प्रतिदर्शों की रुपरेखा निम्न प्रकार है–

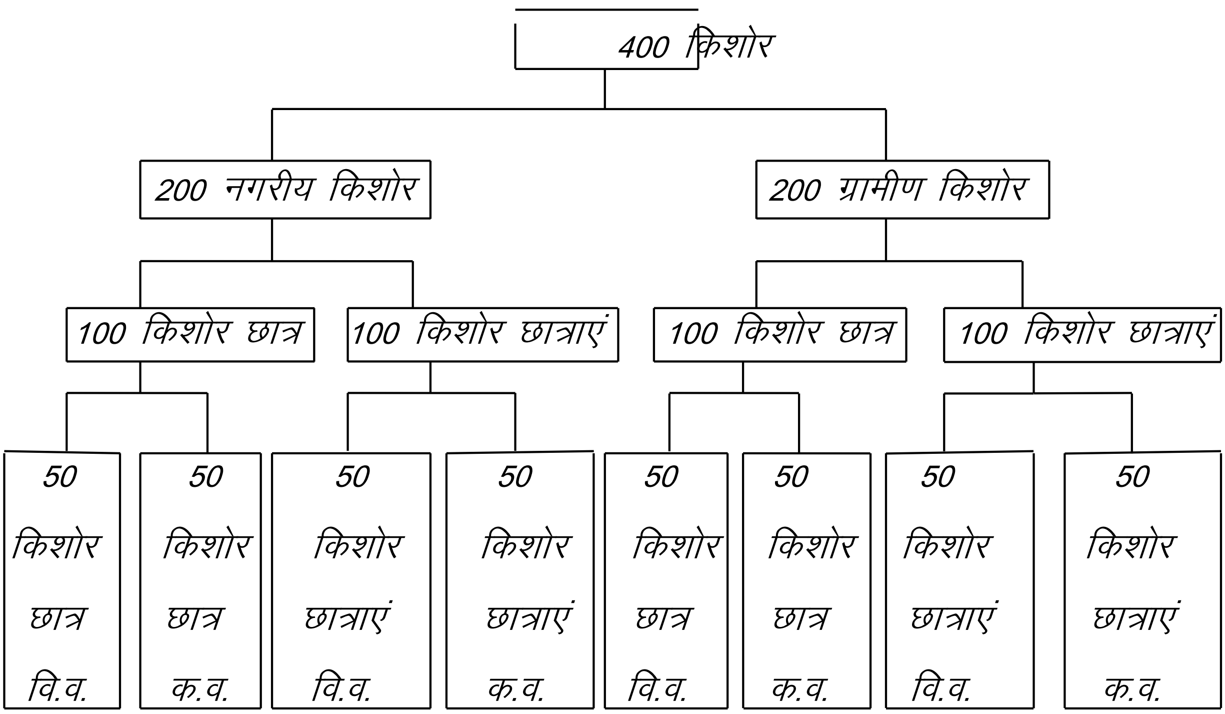

उपकरण – शोध में डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुति नरैन द्वारा निर्मित 'सांवेगिक बुद्धि मापनी' का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त संकलन – शोध में प्रदत्त संकलन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जनपद के इंटर कॉलेजों का सर्वे किया गया है। सर्वप्रथम नैनीताल जनपद के चयनित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से प्रदत्त संकलन की अनुमति ली गयी। उसके पश्चात् वहां के लगभग सभी किशोरों को दस–दस के समूह में लेकर एक शांत कक्ष में बैठाया गया व उनके साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित किया। इसके पश्चात् किशोरों को निर्देश देते हुए सांवेगिक बुद्धि मापनी पर अनुक्रिया ली गयी है। प्रतिदर्श में वर्णित विद्यालयों के सभी किशोरों से प्रदत्त संकलन के पश्चात् उनमें से यादृच्छिक रुप से 400 किशोरों को लिया गया जो प्रतिदर्श में वर्णित स्तरीकरण को पूरा करते थे।

प्रदत्त विश्लेषण – उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जनपद के किशोरों से प्रदत्त संकलन के पश्चात् उनका सांख्यिकी विश्लेषण 'प्रसरण विश्लेषण (एनोवा)' द्वारा किया गया है। यह गणना SPSS के माध्यम से की गई है।

परिणाम – 1. किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर निवास स्थान, लिंग–भेद एवं संकाय के प्रभावों की एफ–अनुपात तालिका निम्न है –

स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ–अनुपात
निवास स्थान (नगरीय–ग्रामीण)	2.72	1	2.72	0.25
लिंग–भेद (छात्र–छात्राएं)	9.92	1	9.92	0.93
संकाय (विज्ञान–कला वर्ग)	4.20	1	4.20	0.39
अंतःक्रियात्मक प्रभाव (निवास स्थान–लिंग–भेद)	11.22	1	11.22	1.05
अंतःक्रियात्मक प्रभाव (लिंग–भेद–संकाय)	4.20	1	4.20	0.39
अंतःक्रियात्मक प्रभाव (निवास स्थान–संकाय)	64.80	1	64.80	6.11*
अंतःक्रियात्मक प्रभाव (निवास स्थान–लिंग–भेद–संकाय)	0.12	1	0.12	0.01
त्रुटि	4152.74	392	10.59	
योग	185939.00	400		

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका के अनुसार नगरीय व ग्रामीण किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर के मध्य एफ–अनुपात 0.25 है, अर्थात नगरीय व ग्रामीण किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अंती नहीं है। छात्र व छात्राओं के मध्य एफ–अनुपात 0.93 है, अर्थात छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है। विज्ञान व कला वर्ग के किशोरों के मध्य एफ–अनुपात 0.39 है, अर्थात विज्ञान व कला वर्ग के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका के अनुसार किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर के निवास स्थान व लिंग–भेद के अंतःक्रियात्मक प्रभाव का एफ–अनुपात 1.05 है, अर्थात किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर निवास स्थान व लिंग–भेद का कोई सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं है। लिंग–भेद व संकाय के अंतःक्रियात्मक प्रभाव का एफ–अनुपात 0.39 है, अर्थात किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर लिंग–भेद व संकाय का कोई सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं है। निवास स्थान व संकाय के अंतःक्रियात्मक प्रभाव का एफ–अनुपात 6.11 है, अर्थात किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर निवास स्थान व संकाय का 0.05 स्तर पर सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव है। निवास स्थान, लिंग–भेद व संकाय के अंतःक्रियात्मक प्रभाव का एफ–अनुपात 0.01 है, अर्थात किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर निवास स्थान, लिंग–भेद व संकाय का कोई सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया।

2. किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर निवास स्थान, लिंग–भेद एवं संकाय के प्रभावों की मध्यमान तालिका निम्न है –

स्वतंत्र चर	**निवास स्थान**		**लिंग–भेद**		**संकाय**	
	नगरीय	**ग्रामीण**	**छात्र**	**छात्रा**	**विज्ञान वर्ग**	**कला वर्ग**
प्रतिदर्श	200	200	200	200	200	200
मध्यमान	21.23	21.39	21.16	21.47	21.41	21.21
मानक विचलन	3.29	3.23	3.11	3.40	3.27	3.25

तालिका के अनुसार कहा जा सकता है कि नगरीय व ग्रामीण किशोरों के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 21.23 व 21.47 तथा 3.29 व 3.23 रहा। छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 21.16 व 21.47 तथा 3.11 व 3.40 रहा। विज्ञान व कला वर्ग के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 21.41 व 21.21 तथा 3.27 व 3.25 रहा।

किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर निवास स्थान के प्रभाव के मध्यमान का आरेख निम्न है

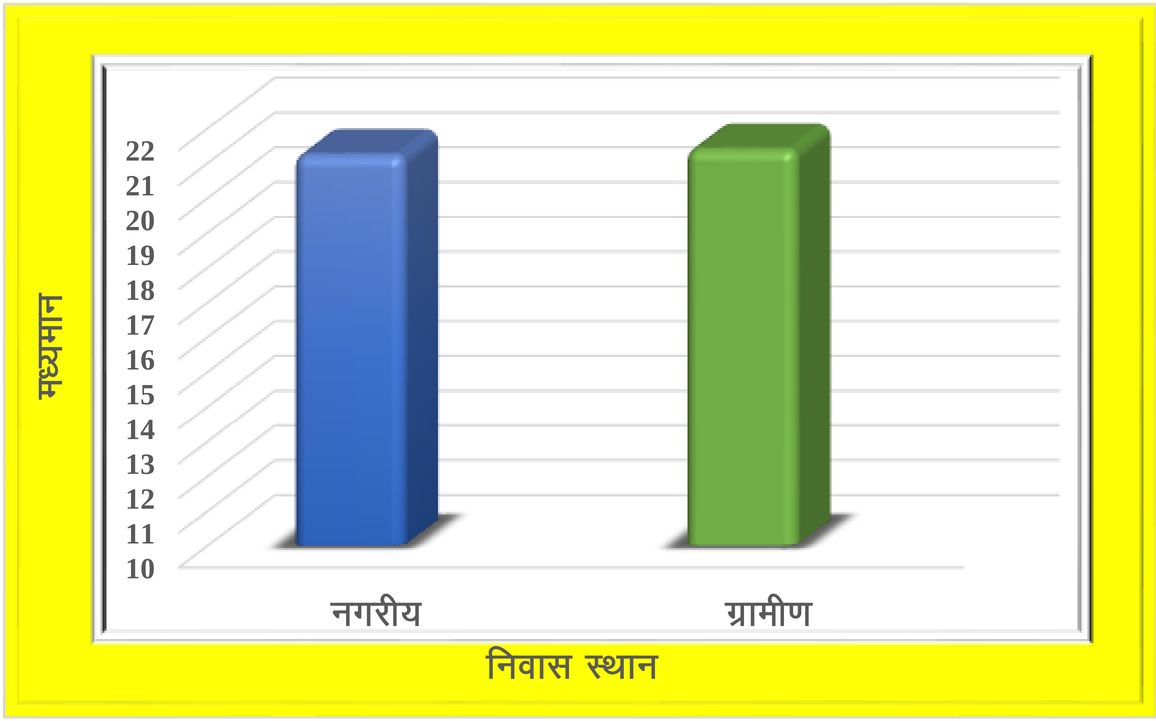

किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर लिंग–भेद के प्रभाव के मध्यमान का आरेख निम्न है –

किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर संकाय के प्रभाव के मध्यमान का आरेख निम्न है

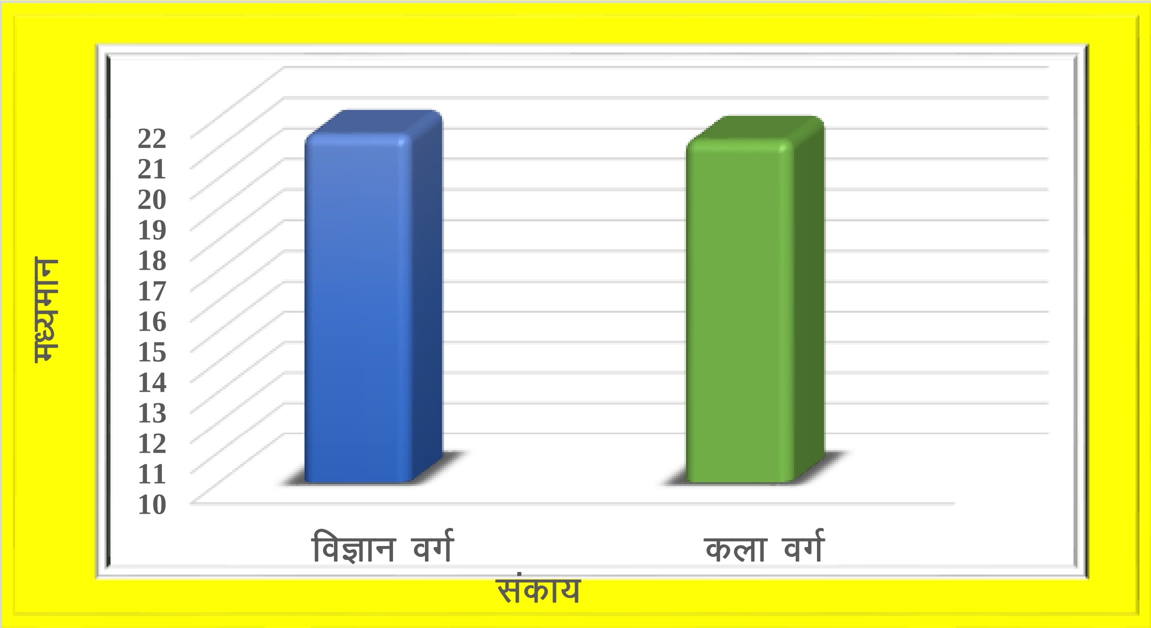

3. किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर निवास, लिंग एवं संकाय के अन्तःक्रियात्मक प्रभावों की मध्यमान तालिका निम्न है –

निवास स्थान / लिंग–भेद / संकाय	छात्र		छात्राएं	
	विज्ञान वर्ग	कला वर्ग	विज्ञान वर्ग	कला वर्ग
नगरीय	21.06	21.42	20.80	21.64
ग्रामीण	21.66	20.48	22.14	21.30

तालिका के अनुसार कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग के नगरीय छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान क्रमशः 21.06 व 20.80 रहा। कला वर्ग के नगरीय छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान क्रमशः 21.42 व 21. 64 रहा। विज्ञान वर्ग के ग्रामीण छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 21.66 व 22.14 रहा। कला वर्ग के ग्रामीण छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 20.48 व 21.30 रहा।

तालिका के अनुसार कला वर्ग की नगरीय छात्राओं का सांवेगिक बुद्धि स्तर औसत विज्ञान वर्ग की नगरीय छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि स्तर के औसत की अपेक्षा अधिक रहा। कला वर्ग के ग्रामीण छात्रों का सांवेगिक बुद्धि स्तर का औसत विज्ञान वर्ग के ग्रामीण छात्रों के सांवेगिक बुद्धि स्तर के औसत से कम रहा। कला वर्ग की ग्रामीण छात्राओं का सांवेगिक बुद्धि स्तर का औसत विज्ञान वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि स्तर के औसत से अधिक रहा।

किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर निवास स्थान, लिंग–भेद एवं संकाय के अन्तःक्रियात्मक प्रभावों के मध्यमान का आरेख निम्न है –

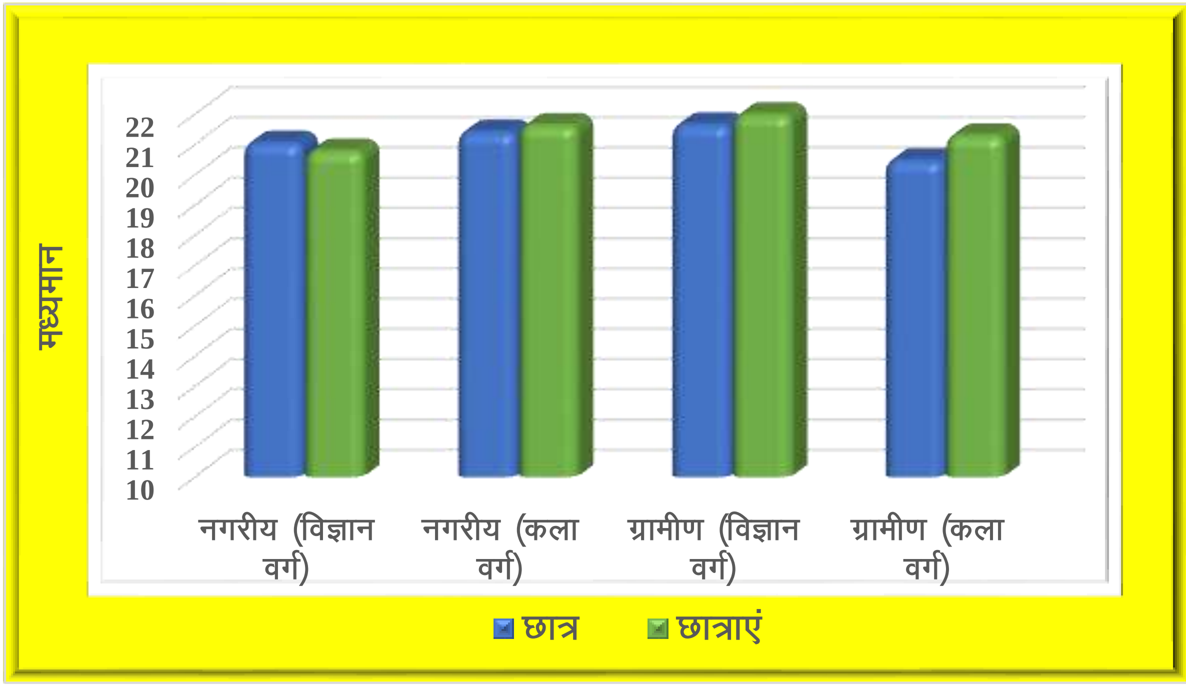

व्याख्या – 1. परिकल्पना संख्या 1 हेतु प्राप्त परिणाम की व्याख्या – किशोरों के निवास स्थान के संदर्भ में सांवेगिक बुद्धि मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों के एफ–अनुपात की सारणी के अनुसार कहा जा सकता है कि नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना संख्या 1 **'नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।'** स्वीकृत की जाती है। अर्थात प्रस्तुत शोध में किशोरों के निवास स्थान का उनके सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा। नगरीय व ग्रामीण दोनों प्रकार के किशोरों में सांवेगिक बुद्धि समान रुप से देखी गयी। ऐसे ही परिणाम आलम, महफूज़ (2018) के शोध 'ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ एडोलोसेंट्स स्टूडेंट्स' तथा संगवान, संतोष एवं बाल्दा, शांति (2019) के शोध 'इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ एडोलोसेंट्स' में पाया गया। इन शोधों के परिणामों में भी नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2. **परिकल्पना संख्या 2 हेतु प्राप्त परिणाम की व्याख्या** – किशोरों के लिंग–भेद के संदर्भ में सांवेगिक बुद्धि मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों के एफ–अनुपात की सारणी के अनुसार कहा जा सकता है कि छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना संख्या 2 **'छात्र व छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।'** स्वीकृत की जाती है। अर्थात प्रस्तुत शोध में किशोरों के लिंग–भेद का उनके सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा। छात्र व छात्राओं दोनों में सांवेगिक बुद्धि समान रुप से देखी गयी। ऐसे ही परिणाम माथुर, मल्होत्रा और दुबे (2005) के शोध 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चयन चर में लिंग अंतर का मूल्यांकन', कौर, कमलप्रीत एवं मीनाक्षी (2011) के शोध ''उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय और गैर राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन'', सोनी, मधु कंवर व बाबल, जगदीश (2016) के शोध ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन'', पुनेठा, दीपा; मित्तल, कविता एवं शर्मा, सपना (2017) के शोध ''उत्तराखण्ड राज्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का लिंग, संकाय एवं बोर्ड के सन्दर्भ में अध्ययन'', घोराई, बिकास चंद्र एवं कुंदु, समायिता (2021) के शोध 'ए स्टडी ऑन इमोशनल इंटेलीजेंस एमंग स्कूल गोइंग

एडोलोसेंट्स इन कोलकाता' तथा कुलकर्णी, प्रिया योगेश एवं वेल्हल, गजानन (2023) के शोध 'इमोशनल इंटेलीजेंस फ्रॉम जेंडर पर्सपेक्टिव ड्यूरिंग मिड टू लेट एडोलोसेंस इन एन इंडियन कॉनटेक्स्ट' में भी पाया गया। इन शोधें के परिणामों में भी छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

3. परिकल्पना संख्या 3 हेतु प्राप्त परिणाम की व्याख्या – किशोरों के संकाय के संदर्भ में सांवेगिक बुद्धि मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों के एफ–अनुपात की सारणी के अनुसार कहा जा सकता है कि विज्ञान व कला वर्ग के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना संख्या 3 **'विज्ञान व कला वर्ग के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।'** स्वीकृत की जाती है। अर्थात प्रस्तुत शोध में किशोरों के संकाय का उनके सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा। विज्ञान व कला वर्ग दोनों प्रकार के किशोरों में सांवेगिक बुद्धि समान रुप से देखी गयी। ऐसे ही परिणाम पुनेठा, दीपा; मित्तल, कविता एवं शर्मा, सपना (2017) के शोध ''उत्तराखण्ड राज्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का लिंग, संकाय एवं बोर्ड के सन्दर्भ में अध्ययन'' के परिणाम में भी पाया गया। इस शोध के परिणाम में भी विज्ञान एवं कला वर्ग के किशोरों के सांवेगिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

4. परिकल्पना संख्या 4 हेतु प्राप्त परिणाम की व्याख्या – किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर निवास स्थान, लिंग–भेद तथा संकाय के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के संदर्भ में प्राप्त प्राप्तांकों के एफ–अनुपात की सारणी के अनुसार कहा जा सकता है कि निवास स्थान–लिंग–भेद, लिंग–भेद–संकाय तथा निवास स्थान–लिंग–भेद–संकाय का किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर कोई सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। परंतु निवास स्थान–संकाय का किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव पड़ता है।

अतः परिकल्पना संख्या 4 **'किशोरों में सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर निवास स्थान, लिंग–भेद व संकाय का कोई सार्थक अन्तःक्रियात्मक प्रभाव नहीं होगा।'** आंशिक रुप से स्वीकृत की जाती है क्योंकि निवास स्थान–लिंग–भेद, लिंग–भेद–संकाय तथा निवास स्थान–लिंग–भेद–संकाय का किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर कोई सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। यह परिकल्पना आंशिक रुप से अस्वीकृत की जाती है क्योंकि निवास स्थान–संकाय का किशोरों के सांवेगिक बुद्धि स्तर पर सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष – 1. किशोरों में सांवेगिक बुद्धि के स्तर पर निवास स्थान–संकाय का सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव पाया गया।
2. कला वर्ग की नगरीय छात्राओं का सांवेगिक बुद्धि स्तर का औसत विज्ञान वर्ग की नगरीय छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि स्तर के औसत की अपेक्षा अधिक रहा।
3. कला वर्ग के ग्रामीण छात्रों का सांवेगिक बुद्धि स्तर का औसत विज्ञान वर्ग के ग्रामीण छात्रों के सांवेगिक बुद्धि स्तर के औसत से कम रहा।
4. कला वर्ग की ग्रामीण छात्राओं का सांवेगिक बुद्धि स्तर का औसत विज्ञान वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि स्तर के औसत से अधिक रहा।

संदर्भ

Alam, Mahfooz (2018), A Study of Emotional Intelligence of adolescent students, *International Journal of Indian Psychology*, Vol 6, Issue 3, ISSN 2348 5396, Page 127-133.

Bhattacharya, Somnath & Saha, Biswajit (2024), A probe into the emotional intelligence of the school going adolescents, *International journal for multidisciplinary research*, ISSN – 2582-2160, Vol-6, Issue-3, Page – 1-10.

Furqani, Nusaibah Nur (2020), The role of Emotional Intelligence in Adolescent development, 5th ASEAN Conference on Psychology, Counselling and Humanities, Page 277-280.

Gupta, R.B., (2000), Vikasatmak Manovigyan, Ratan Prakashan Mandir, Agra, Page 469-486.

Kulkarni, Priya Yogesh & Velhal, Gajanan (2023), Emotional Intelligence from gender perspective during mid to late adolescence in an Indian context, *Indian Journal of Community Medicine*, Vol 48, Issue 2, ISSN 0970-0218, Page 281-284.

Kumar, M.S. (2014), in Manovigyan, Delhi: Motilal Banarasidas, page 95-98.

Kumari, R. (2014), Relationship between gender and Emotional Intelligence among Adolescents, Behavioural Research Review, Vol 6(2), Page 71-73.

Lal, J.N. (2000), Vikasatmak Manovigyan, Neelkamal Prakashan, Gorakhpur, Page 429-446.

Punetha, Deepa (2017) Uttarakhand rajya me ucch prathmik str pr addhyanrat vidhyarthiyo ki sanvegik buddhi ka ling, sankay avm board ke sanderbh me addhyan, *international journal of applied research*, page 245-249.

Ronad, Prabhakar & Mathias, Sahana (2021), Study of emotional intelligence and life stress in adolescent students from joint & nuclear families of navi Mumbai, *The international journal of Indian psychology*, ISSN – 2348-5396, Vol-9, Issue-2, Page – 526-537.

Sangwan, Santosh & Baida, Shanti (2019), Emotional Intelligence of adolescents, *Indian Journal of Positive Psychology*, Vol 10, Issue 2, ISSN 2229-4937, Page 62-66.

Shrivastava, Nisha (2015) shashkiya avm ashashkiya ucchtar madhymaik vidhyalaya ke vidhyarthiyo ke sanvegatmak buddhi ka addhyan, original article reviews of research, page 1-4.

Singh, A.K. (2004), in adhunik asamanya manovigyan, Delhi: Motilal Banarasidas, page 246-253.

Singh, R.N. (1998), Adhunik Vikasatmak Manovigyan, U.S. Publishers, Varanasi, Page 212-227.

Singh, Rajendra Prasad (2015), in vikasatmak manovigyan, Delhi: Motilal Banarasidas, page 491-496.